*भारत के युग का उदय**

माइकल देबब्रत पात्र

इंदिरा गांधी विकास अनुसंधान संस्थान (आईजीआईडीआर) के निदेशक डॉ. बसंत कुमार प्रधान, सम्मेलन समिति के संयोजक प्रोफेसर सुब्रत सरकार, आईजीआईडीआर के संकाय सदस्य, संस्थान के प्रतिष्ठित पूर्व छात्र, देवियों और सज्जनों, नमस्कार और गुड आफ्टरनून!

मैं आईजीआईडीआर पूर्व छात्रों के सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिए आमंत्रित किए जाने पर बहुत सम्मानित महसूस कर रहा हूं। शायद पहली बार ऐसा हुआ है कि पूर्व छात्र, वर्तमान छात्र और संकाय एक साथ इकट्ठा हुए हैं। आप में से कुछ विभिन्न क्षेत्रों में जीवन यात्रा की बेहतर रूपरेखा बनाते हुए अपने रास्ते पर हैं; अन्य लोग भविष्य के साथ अपना खुद का संबंध शुरू करने की तैयारी में हैं। यह वास्तव में खुशी की बात है कि आप सभी ने आईजीआईडीआर के मातृ आह्वान को कितने अच्छे ढंग से प्रतिसाद दिया है - आखिरकार, जैसा कि ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑफ वर्ड ओरिजिन्स कहता है, एक पूर्व छात्र वह है जो पोषित (संस्कारित) है।

एक महान राष्ट्र के निर्माण की आधारशिला उसकी मानव पूंजी का पोषण है। आईजीआईडीआर ने देश के कुछ प्रतिभाशाली और सबसे अधिक स्वयं प्रेरित विद्वानों को तैयार किया है। उनकी व्यावसायिक सफलताएं अंगभूत रूप से संस्था को परिभाषित करती हैं। पूर्व छात्र प्राप्तकर्ता भी हैं और दाता भी हैं। अल्बर्ट आइंस्टीन के शब्दों में, "यह हर आदमी का दायित्व है कि वह कम से कम दुनिया को उतना वापस करे जितना उसने दुनिया से लिया हो।" जब आप अपनी सफलता की यात्रा पर चल रहे होते हैं, तो इस बात पर विचार करें कि आप अपने नक्शेकदम पर चलने वाले दूसरों की यात्रा को कैसे समृद्ध कर सकते हैं। मैं आपको प्रकाश की किरणों के रूप में देखता हूं जो आपके द्वारा पार किए गए क्षेत्र को रोशन करती हैं, और यही प्रकाश आपके मातृ संस्थान का भी परिचय देता है। आपकी उपलब्धियों की समृद्ध विविधता हमारी संपत्ति है, अनुकरण के योग्य है, और उन लोगों के लिए लाभकारी है जो आज आपके साथ जुड़ते हैं।

जीवन में सफलता की कुंजी के एक प्रेरणादायक वर्णन से प्रेरणा लेते हुए[1] कहा जा सकता है कि राष्ट्रों के मामलों में बाढ़ के रूप में एक ऐसा समय आता है जो उसे भाग्य की ओर ले जाता है। भारत अपने इतिहास में एक ऐसे लहर के शिखर पर है जो इसे अपने नागरिकों के भविष्य के लिए अपने महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को हासिल करने और वैश्विक मामलों में अपनी भूमिका रखने में अपनी पूरी क्षमता से ले जाएगी, तथापि इसमें कई चुनौतियों भी रहेंगी। इसी संदर्भ और भावना को लेकर मैंने सोचा कि मैं भारत के युग के शुभारंभ की कल्पना पर कुछ बात करूं।

जनसांख्यिकी

संयुक्त राष्ट्र[2] के अनुसार, भारत इस वर्ष दुनिया का सबसे अधिक आबादी वाला देश बन गया है, जो 2018 से शुरू होने वाले जनसांख्यिकीय लाभांश की शुरूआत को प्रमाणित करता है। इस विषय पर हमारी सोच में आमूलचूल परिवर्तन आया है। थॉमस माल्थस[3] के विचार में जिसे विकास में बाधा माना जाता था, हमारी वही बड़ी आबादी को अब एक ऐसी दुनिया में एक संपत्ति और अवसर के रूप में माना जाता है जिसमें कई देश उम्र बढ़ने और यहां तक कि जनसंख्या में गिरावट का सामना कर रहे हैं। इसके विपरीत, हमारी आबादी युवा है - औसत आयु 28 वर्ष है। दुनिया में हर छठा कामकाजी उम्र (15-64 वर्ष) का व्यक्ति भारतीय है। बचत और निवेश को बढ़ावा देने की क्षमता, जो इसमें है वह भावी दुनिया की आर्थिक शक्ति के रूप में भारत के उद्भव को काफी बढ़ाती है। वास्तव में, इस महत्वपूर्ण घटनाक्रम को 'दुनिया

---

* मुंबई में 10 मई 2023 को इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट रिसर्च (आईजीआईडीआर) के पूर्व छात्रों के सम्मेलन में भारतीय रिज़र्व बैंक के उप गवर्नर माइकल देबब्रत पात्रा द्वारा दिया गया उद्घाटन भाषण। सितिकंठ पट्टनायक, महुआ रॉय, रजनी प्रसाद, पल्लवी चव्हाण, अत्री मुखर्जी, धीरेंद्र गजभिये, धन्या वी., पूर्णा बनर्जी, साक्षी अवस्थी, नवीन सिंह से बहुमूल्य टिप्पणियां और विनीत कुमार श्रीवास्तव तथा समीर रंजन बेहरा से संपादकीय मदद प्राप्त हुई।

1 विलियम शेक्सपियर, *जूलियस सीज़र*।

2 https://www.un.org/development/desa/dpad/publication/un-desa-policy-brief-no-153-india-overtakes-china-as-the-worlds-most-populous-country/#:~:text=In%20April%202023%2C%20India's%20population,to%20grow%20for%20several%20decades

3 "द पॉवर ऑफ़ पापुलेशन इस सो सुपीरियर टू द पॉवर ऑफ़ द अर्थ टू प्रोड्यूस सुब्सिस्टेन्स फॉर मन, दैट प्रीमाइच्युर डेथ मस्ट इन सम शेप और अदर विजिट द ह्यूमन रेस" - थॉमस माल्थस, 1798। जनसंख्या के सिद्धांत पर एक निबंध। अध्याय VII, पृष्ठ 61।

4 द वॉल स्ट्रीट जर्नल, 14 अप्रैल 2023

के गुरुत्वाकर्षण केंद्र को स्थानांतरित करना' कहा गया है क्योंकि यह वैश्विक व्यवस्था में भारत की भूमिका में एक अमुलाग्र परिवर्तन की शुरुआत कर सकता है। इसके अलावा, भारत की आबादी अगले चार दशकों तक बढ़ने की उम्मीद है, जो 2063 में 1.7 बिलियन के नज़दीक हो जाएगी। अब से 2050 के बीच दुनिया की कामकाजी उम्र की आबादी में वृद्धि का छठा हिस्सा भारत द्वारा प्रदान किया जाएगा।

पहले से ही, भारत बाजार विनिमय दरों के मामले में दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और क्रय शक्ति समता (पीपीपी) के मामले में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) ने गणना की है कि पीपीपी के संदर्भ में, भारत की अर्थव्यवस्था 2048 तक दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगी।

हमें इस जिम्मेदारी को निभाने के लिए तैयार रहना चाहिए। कुछ मायनों में हमने शुरुआत की है। भारत भौतिक बुनियादी ढांचे को विश्व स्तर पर उन्नत कर रहा है जिनमें सड़कें और हवाई अड्डे सबसे अधिक दिखाई देने वाले आयाम हैं। हम डिजिटल भुगतान क्रांति के मुहाने पर खड़े हैं। फिर भी हमारी सबसे विकट चुनौतियां बनी हुई हैं: मौजूदा कामकाजी उम्र की आबादी का केवल आधा हिस्सा श्रम शक्ति का हिस्सा है। इसके अलावा, भारत की महिला श्रम शक्ति भागीदारी दुनिया में सबसे कम है, यहां तक कि कम आय वाले देशों की तुलना में भी कम है। भारत की श्रम उत्पादकता (प्रति घंटे काम करने वाली जीडीपी) उन देशों के निम्न मध्यम आय वर्ग के समकक्षों से भी कम है, जिनमें हमें वर्गीकृत किया गया है। नतीजतन, संयुक्त राष्ट्र के अनुसार, 16 प्रतिशत आबादी गरीबी में रह रही है। हमें कामकाजी उम्र की आबादी के विस्तार के अनुरूप रोजगार पैदा करके, कार्यबल को कुशल बनाकर और उसे एक ऐसा संस्थागत वातावरण प्रदान करके, जो बदलती प्रौद्योगिकियों और मांग के स्वरूप के अनुसार काम के लचीलेपन को सक्षम बनाता है, इन सभी को बदलना होगा। महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें काम की गरिमा और कार्यस्थल की शालीनता सुनिश्चित करके कार्यबल में अधिक महिला भागीदारी को सक्षम करना चाहिए। हमारी आबादी एक सुअवसर प्रस्तुत करती है जिसे केवल तभी महसूस किया जा सकता है जब हम इसे आर्थिक तौर पर अवसर प्रदान करने में सफल होते हैं।

प्रवासी

भारत के जनसांख्यिकीय लाभ का एक बाहरी प्रतिबिंब दुनिया भर में भारतीय समुदायों का जीवंत विस्तार है। भारत हमेशा एक खुली अर्थव्यवस्था रहा है। 3000 ईसा पूर्व में कांस्य युग से ही अंतरराष्ट्रीय प्रवासन शेष दुनिया के साथ भारत के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक संबंधों को परिभाषित करने वाली एक प्रमुख शक्ति रहा है।

संयुक्त राष्ट्र के प्रवासी डेटाबेस के 2022 के प्रकाशन में अनुमान बताया गया है कि भारतीय प्रवासी आंकड़ा 18 मिलियन[5] है जो दुनिया में सबसे बड़ा है और 2020 में अंतरराष्ट्रीय प्रवासियों (281 मिलियन) की कुल मात्रा का 6.4 प्रतिशत है। यह प्रवासन दुनिया भर में बिखरा हुआ है, जिसमें वर्तमान में प्रमुख गंतव्य संयुक्त अरब अमीरात और इसके बाद अमेरिका है। दिलचस्प बात यह है कि जनसांख्यिकीय लाभांश पर आंतरिक प्रवासन का भी प्रभाव पड़ रहा है।

पिछले कुछ वर्षों में, प्रवासी भारतीयों के बारे में हमारी धारणाएं भी 'प्रतिभा पलायन' से 'प्रतिभा लाभ' में बदल गई हैं, जो भारतीयों द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी, उद्यमिता, अंतरराष्ट्रीय राजनीति, चिकित्सा, कला और संस्कृति सहित वैश्विक क्षेत्र में विभिन्न क्षेत्रों में किए गए योगदान से प्रेरित है, जिनमें से कुछ नोबेल पुरस्कार विजेता बन गए हैं। यह अनुमान लगाया गया है कि संयुक्त अमेरिका में लगभग 500 यूनिकॉर्न के 1078 संस्थापकों में से 90 से अधिक भारतीय मूल[6] के व्यक्ति हैं। हाल के एक अध्ययन[7] के अनुसार विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) के क्षेत्रों में ये पेशेवर यूएस अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं और अत्याधुनिक विचार और प्रौद्योगिकी उपलब्ध कराते हुए रोजगार निर्मित करते हैं और जीवन स्तर बढ़ाते हैं। भारत आप्रवासी जन्म समूह का सबसे बड़ा देश है, जो सभी विदेशी मूल के एसटीईएम श्रमिकों का 28.9 प्रतिशत है।

---

5 संयुक्त राष्ट्र प्रवासी स्टॉक डेटाबेस

6 https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1889765

7 https://www.americanimmigrationcouncil.org/research/foreign-born-stem-workers-united-states

भारतीय अर्थव्यवस्था को इस गतिशील और उद्यमशील प्रवासी समूह से लाभ हुआ है। भारत वर्तमान में विश्व में सर्वाधिक प्रेषण प्रवाह प्राप्तकर्ता है। 2022 में 108 बिलियन अमेरिकी डॉलर का प्रेषण प्राप्त हुआ, जो एक साल पहले की तुलना में 24.6 प्रतिशत अधिक है, और भारत के सकल घरेलू उत्पाद का 3 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त, विदेशों में रहने वाले भारतीयों के पास फरवरी 2023 के अंत तक भारतीय बैंकों में 136 बिलियन यूएस डॉलर जमा हैं।

आने वाले समय में तकनीकी सफलताओं, ऊर्जा संक्रमण और भू-अर्थशास्त्र से प्रेरित श्रम बाजार में बदलाव से विदेशों में काम करने और भारत में काम करने के बीच का अंतर धुंधला हो जाएगा। जनसांख्यिकीय लाभ भारत को इस बदलाव का अधिकतम लाभ उठाने के लिए तैयार कर सकता है। विश्व आर्थिक मंच की फ्यूचर ऑफ जॉब्स रिपोर्ट, 2023 श्रम बाजारों में वैश्विक मंथन की ओर इशारा करती है – 69 मिलियन नौकरियों का निर्माण और 83 मिलियन नौकरियों की गिरावट – इसमें आपूर्ति शृंखला और परिवहन, मीडिया, मनोरंजन और खेल उद्योग प्रमुख क्षेत्र होंगे। भारत के श्रम बाजारों में परिवर्तन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग (एआई और एमएल) जैसे प्रौद्योगिकी-नेतृत्व वाले क्षेत्रों द्वारा संचालित होगा, इसके बाद डेटा विश्लेषक और वैज्ञानिक होंगे। भारत में नियोक्ता भविष्य की प्रतिभा की उपलब्धता के मामले में सबसे अधिक उत्साहित हैं और उत्तरदाताओं का मानना है कि मौजूदा कार्यबल को अपेक्षित कार्य के लिए अधिक कुशल बनाया जा सकता है और साथ ही प्रतिभा को बनाए रखा जा सकता है। भारतीय समूह में उत्तरदाताओं का एक बड़ा हिस्सा प्रतिभा की प्रगति और पदोन्नति प्रक्रिया में सुधार के साथ-साथ व्यावसायिक प्रथाओं के रूप में प्रभावी कौशल और उन्नयन प्रदान करने पर विचार करने के इच्छुक हैं जो वैश्विक समूह की तुलना में प्रतिभा तक पहुंच में सुधार कर सकते हैं। इसलिए प्राथमिकता देते हुए भारत को अपनी कौशल रणनीति को सही करने की जरूरत है।

विविधता

भारतीय अर्थव्यवस्था अपने सभी क्षेत्रों को शामिल करते हुए एक स्थिर लेकिन मौलिक परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। संभवत: सबसे उल्लेखनीय परिवर्तन भारत के सेवा निर्यात क्षेत्र में हो रहा है, जो महामारी से अप्रभावित रहा तथा जो 2020 के बाद से प्रति वर्ष 25 प्रतिशत से अधिक बढ़ रहा है, और बाहरी क्षेत्र की व्यवहार्यता के लिए मूल्यवान समर्थन प्रदान कर रहा है। हालांकि सॉफ्टवेयर और व्यावसायिक सेवाएं इस मजबूत प्रदर्शन के मुख्य चालक हैं, आईटी में हुई प्रगति ने न केवल सेवाओं को अधिक व्यापार योग्य बना दिया है बल्कि तेजी से विस्तारित भी कर दिया है: वैश्विक आपूर्ति शृंखला में एकल सेवा गतिविधि अब विभाजित रूप में हो सकती है और विभिन्न भौगोलिक स्थानों पर अलग-अलग की जा सकती है। तदनुसार, क्षेत्राधिकार व्यवसाय निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए अपनी आपूर्ति शृंखलाओं का विकेंद्रीकरण और उनमें विविधता ला रहे हैं। इन कारकों ने आईटी-सक्षम सेवाओं के एक नए माध्यम को जन्म दिया है – बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियां (एमएनसी) वैश्विक क्षमता केंद्र (जीसीसी) स्थापित कर रहे हैं, जो अपतटीय कार्यालय हैं, जो समग्र आईटी विशिष्ट क्षेत्र में सेवाओं की एक विस्तृत शृंखला प्रदान करते हैं।

वैश्विक जीसीसी में भारत की हिस्सेदारी करीब 40 प्रतिशत है और कुल आईटी सेवा निर्यात में इनकी हिस्सेदारी 25 प्रतिशत होने का अनुमान है। जीसीसी भी विविधीकरण को आगे बढ़ा रहे हैं, जिसमें इलेक्ट्रॉनिक्स, खुदरा, मोटर वाहन, बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं और आतिथ्य जैसे विभिन्न क्षेत्रों की फर्में है, जो भारत में जीसीसी स्थापित कर रहे हैं। जीसीसी सेवाओं में लेखांकन, कानूनी सेवाएं, व्यापार परामर्श, संचालन, क्षमता विकास और अनुसंधान शामिल है। जीसीसी डेटा एनालिटिक्स, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस / मशीन लर्निंग, चिप डिजाइन, सिस्टम डिजाइन, रोबोटिक्स और नए युग के अन्य प्रौद्योगिकी समाधानों जैसी उच्च-मूल्य और ज्ञान-गहन परियोजनाओं की आवश्यकता को पूरा करते हैं जिनकी मांग वैश्विक तकनीकी बाजार में उच्च है। भारत इंजीनियरिंग आर एंड डी (ईआर एंड डी) केंद्रों के लिए भी एक हब बन रहा है क्योंकि प्रमुख बहुराष्ट्रीय कंपनियां विभिन्न व्यावसायिक डोमेन में अपने उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) विकसित कर रही हैं। नेशनल एसोसिएशन ऑफ सॉफ्टवेयर एंड सर्विस कंपनीज (नैसकॉम) का अनुमान है कि भारत 2026 तक 500 जीसीसी जोड़ेगा। वे भर्ती करने जा रहे हैं। भारत के भविष्य के नागरिकों को इस क्रांति के लिए तैयार रहना चाहिए। विश्व स्तरीय नौकरियों के पद भरने के लिए दुनिया हमारे दरवाजे पर आ रही है।

डिजिटल क्रांति

भारत इस समय चल रही पांचवीं तकनीकी लहर - सूचना और संचार क्रांति[8] में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हम वैश्विक स्तर पर वास्तविक समय के भुगतान लेनदेन में सबसे बड़े सदस्य के रूप में उभरे हैं, जिसकी हिस्सेदारी 50 प्रतिशत के करीब है। यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) खुदरा भुगतान पारिस्थितिकी तंत्र का मुख्य आधार है, जिसमें अकेले अप्रैल 2023 में लगभग 9 बिलियन लेनदेन हुए हैं जो वैश्विक ध्यान आकर्षित कर रहा है। दी इंडिया स्टैक हमारी आबादी को डिजिटल युग में ले जाने के लिए एक एकीकृत सॉफ्टवेयर प्लेटफॉर्म बनाता है। इंडिया स्टैक दुनिया का सबसे बड़ा ओपन एप्लीकेशन प्रोग्रामिंग इंटरफेस (एपीआई) है। इसे चरणबद्ध तरीके से लागू किया जा रहा है, जिसकी शुरुआत आधार यूनिवर्सल आईडी नंबर की शुरुआत के साथ होती है; इलेक्ट्रॉनिक नो योर कस्टमर (ईकेवाईसी) की शुरुआत, जो पहचान विवरणों को कागज़ रहित और शीघ्र सत्यापन को सक्षम बनाता है; ई-साइन, जिसके द्वारा उपयोगकर्ता किसी दस्तावेज़ में कानूनी रूप से मान्य इलेक्ट्रॉनिक हस्ताक्षर संलग्न करते हैं; यूपीआई, कैशलेस भुगतान को सक्षम करता है; और हाल ही में डिजी लॉकर उपलब्ध कराया गया है जो दस्तावेजों और प्रमाणपत्रों को जारी करने और सत्यापन के लिए एक मंच है। इंडिया स्टैक के लाभों का मोबाइल की बढ़ती पैठ के माध्यम से व्यापक रूप से फायदा हो रहा है। यह तर्क दिया जाता है कि इंडिया स्टैक दुनिया भर में डिजिटल भुगतान प्रणालियों की ओर तेजी से बढ़ सकता है और नकदी को समाप्त कर सकता है[9]।

डिजिटलीकरण भी सीमा पार भुगतान क्षेत्र में क्रांति को शक्ति प्रदान कर रहा है। भारत यूपीआई को अन्य देशों के फास्ट पेमेंट सिस्टम (एफपीएस) के साथ जोड़ रहा है। यूपीआई को सिंगापुर के पेनाउ के साथ जोड़ा गया है, जिससे मोबाइल एप्प का उपयोग करके लागत प्रभावी सीमा पार पीयर-टू-पीयर (पी 2 पी) अंतरण होने की उम्मीद है, और दोनों देशों के बीच व्यापार, यात्रा और प्रेषण प्रवाह गहरा होगा। इसके अलावा अन्य लिंक-अप आने वाले हैं। भारत के भीतर भी घरेलू भुगतान माध्यमों में इंटरऑपरेबिलिटी बढ़ाने को प्राथमिकता दी जा रही है। भारत डिजिटल रुपया शुरू करने की भी तैयारी कर रहा है। भूटान और सिंगापुर में क्यूआर कोड-आधारित मर्चेंट भुगतान की अनुमति देने वाले भुगतान सेवा प्रदाताओं के साथ गठजोड़ के माध्यम से घरेलू भुगतान मोड का अंतरराष्ट्रीयकरण सक्षम किया जा रहा है। यूपीआई की बढ़ती लोकप्रियता को देखते हुए इस भुगतान सुविधा को स्थानीय व्यापारी लेनदेन के लिए जी 20 देशों से आने वाले यात्रियों के लिए विस्तारित किया गया है।

आगे की ओर देखें तो डिजिटलीकरण का भविष्य उज्ज्वल है। डिजिटल भुगतान 2026 तक तीन गुना बढ़कर 10 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर हो जाएगा, जिसमें 3 में से 2 लेनदेन गैर-नकद माध्यम से होंगे। भविष्य में सीमा पार भुगतानों के तात्कालिक अंतरण के लिए भुगतान माध्यम की एक समर्पित व्यवस्था होगी। इसके अलावा डिजिटल और वित्तीय समावेशन तथा सीमा पार भुगतान विनियमों का अधिक सामंजस्य भी सुनिश्चित किया जाएगा।

अंतरराष्ट्र नीति

भारत की जी-20 अध्यक्षता हमारे इतिहास में एक ऐतिहासिक क्षण है क्योंकि हम सामूहिक कल्याण के लिए व्यावहारिक वैश्विक समाधान खोजने और सभी के लिए एक शाश्वत और समावेशी भविष्य को प्रोत्साहित करने में केन्द्रीय भूमिका निभाना चाहते हैं। हमारे दृष्टिकोण - वसुधैव कुटुम्बकम- एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य के सामूहिक प्रयास, समन्वय और आम सहमति बनाने के लिए जी-20 दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं को एक मंच पर लाता है।

भारत एक सुधारयुक्त बहुपक्षवाद को प्राथमिकता दे रहा है ताकि 21वीं सदी के लिए अधिक जवाबदेह, समावेशी, न्यायपूर्ण, न्यायसंगत और प्रतिनिधि बहुध्रुवीय अंतरराष्ट्रीय प्रणाली का निर्माण हो सके। हमारी प्राथमिकताओं में खाद्य और ऊर्जा असुरक्षा के व्यापक आर्थिक प्रभावों से निपटना; जलवायु परिवर्तन; बहुपक्षीय विकास बैंकों (एमबीडी) का सुदृढ़ीकरण; ऋण स्थिरता; सतत पूंजी प्रवाह के माध्यम से वित्तीय लचीलापन को मजबूत करना; समावेशी, न्यायसंगत और शाश्वत विकास का वित्तपोषण; डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे का लाभ उठाना; जलवायु वित्तपोषण; और तकनीकी परिवर्तन से प्राप्त होने वाले अवसर और जोखिम शामिल हैं ।

---

[8] मानव इतिहास में तकनीकी नवाचार के पांच विस्फोट हुए हैं: औद्योगिक क्रांति; भाप और रेलवे युग; स्टील, बिजली और भारी इंजीनियरिंग का युग; तेल, ऑटोमोबाइल और बड़े पैमाने पर उत्पादन का युग; और सूचना और दूरसंचार का युग - कार्लोटा पेरेज़, टेक्नोलोजिकल रिवोल्यूशन्स एंड फिनान्शियल कॅपिटल: दी डायनामिक्स ऑफ बबल्स एंड गोल्डन एजेस. चेल्टेनहम: एडवर्ड एल्गर, 2002

[9] "द इंडिया स्टैक: ओपनिंग दी डिजिटल मार्केटप्लेस टू दी मासेस". फाइनेंशियल टाइम्स, 20 अप्रैल 2023

वित्त क्षेत्र में हमारा उद्देश्य वित्तीय स्थिरता और वित्तीय एकीकरण के मुद्दों से परे विचार करना है ताकि क्रॉस-सेक्टोरल और मैक्रो-वित्तीय प्रभावों और जोखिमों को पहचाना जा सके। हम अन्य बातों के साथ-साथ बिगटेक और फिनटेक से उत्पन्न होने वाले तीसरे पक्ष के जोखिमों और आउटसोर्सिंग का प्रबंधन करने के लिए वित्तीय संस्थानों की क्षमता को मजबूत करने की दिशा में काम कर रहे हैं, और वित्तीय क्षेत्र की साइबर समुत्थानशीलता को मजबूत करने के लिए वैश्विक सहयोग भी बढ़ा रहे हैं।

इसके अलावा, दुनिया की उम्मीदें जी-20 दिल्ली घोषणापत्र के कार्यान्वयन पर आम सहमति बनाने पर हैं, जो भारत की ऐतिहासिक पहचान बनाने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि हम 'मानव-केंद्रित वैश्वीकरण' के लिए प्रयास कर रहे हैं जो विकासाधीन देशों की आवाजों के प्रति संवेदनशील है।

सक्रिय संघीयता

भारत में जीवन की गुणवत्ता और कारोबारी माहौल को सार्वजनिक नीति के केंद्र में बदलाव से परिभाषित किया जा रहा है जो सतत आर्थिक विकास के महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को प्राप्त करने में भारत के राज्यों के बीच प्रतिस्पर्धी संघीयता को बढ़ावा देता है। प्रतिस्पर्धा करने की स्वतंत्रता प्रत्येक राज्य को अपनी अनूठी विशेषताओं और चुनौतियों को देखते हुए, अन्य राज्यों द्वारा प्राप्त सर्वोत्तम प्रथाओं का अनुकरण करते हुए डिजाइन, प्रयोग, नवाचार और सुधार करने की अनुमति देती है। प्रतिस्पर्धी संघीयता शक्ति का एक उदाहरण प्रत्येक राज्य में निवेश के अवसरों को प्रदर्शित करके घरेलू और विदेशी दोनों तरह के निजी निवेश को आकर्षित करने के लिए राज्यों के बीच होड़ लगना है। प्रतिस्पर्धात्मकता की भावना को उच्चतम नीतिगत स्तरों पर बढ़ावा दिया जा रहा है। व्यापार सुधारों के क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन करने वाले राज्यों को शीर्ष निष्पादक के रूप में मान्यता दी जाती है। इसी प्रकार नीति आयोग ने उप-राष्ट्रीय निर्यात निष्पादन का मूल्यांकन करने के लिए 'निर्यात तैयारी सूचकांक' विकसित किया है।

इसके अलावा, राज्य स्टार्ट-अप रैंकिंग योजना ने राज्यों को समर्पित स्टार्ट-अप नीतियां बनाने के लिए प्रोत्साहित किया है। कई राज्यों ने घरेलू विनिर्माण क्षमता को बढ़ावा देने के लिए अपने श्रम और औद्योगिक संबंधों में ठोस विधायी और प्रशासनिक सुधार भी किए हैं। आज, कई राज्यों ने एकल-खिड़की मंजूरी, उद्यमों द्वारा अनुपालन का स्व-प्रमाणीकरण, पंजीकरण और रिटर्न के लिए ऑनलाइन फाइलिंग और पारदर्शी निरीक्षण प्रणाली जैसी प्रक्रियाएं शुरू की हैं। 'स्मार्ट सिटी मिशन' शाश्वत और समावेशी शहरों को बढ़ावा देता है[11]। आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय ने मार्च 2023 में 'सिटी फाइनेंस रैंकिंग 2022' पोर्टल शुरू किया है, जिसके तहत वर्तमान वित्तीय स्वास्थ्य और समय के साथ वित्तीय प्रदर्शन में सुधार के आधार पर देश में शहरी स्थानीय निकायों का मूल्यांकन 15 संकेतकों[12] के आधार पर किया जाएगा। संयुक्त राष्ट्र के सहयोग से नीति आयोग द्वारा विकसित शाश्वत विकास लक्ष्य (एसडीजी) इंडिया इंडेक्स[13] भी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के बीच वैश्विक विकास लक्ष्यों पर रैंक निर्धारित करके प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दे रहा है।

जैसे-जैसे हमारे राज्य अपने लिए स्थान निर्माण करने के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगे, वे व्यवसाय के विकास का पोषण करेंगे, सर्वोत्तम भौतिक और सामाजिक बुनियादी ढांचे को स्थापित करेंगे और हमें बेहतर बुनियादी सुविधाएं, स्वच्छ ऊर्जा और बेहतर स्वास्थ्य और सामाजिक सेवाएं प्रदान करेंगे। नई प्रौद्योगिकियों और विचारों को लाने वाले विदेशी निवेश के साथ,

[10] ढांचे में चार मुख्य आयाम शामिल हैं: नीति, व्यापार पारिस्थितिकी तंत्र, निर्यात पारिस्थितिकी तंत्र और निर्यात निष्पादन। सभी महत्वपूर्ण पैरामीटरों नामत: निर्यात संवर्धन नीति, संस्थागत ढांचा, कारोबारी माहौल, अवसंरचना, परिवहन संपर्क, वित्त तक पहुंच, निर्यात अवसंरचना, व्यापार समर्थन, अनुसंधान और विकास अवसंरचना, विकास उन्मुखीकरण और निर्यात विविधीकरण को सूचकांक के चार मुख्य आयामों के तहत उप स्तंभों के रूप में शामिल किया गया है। गुजरात, महाराष्ट्र और कर्नाटक में समग्र निर्यात तैयारी स्कोर उच्चतम है।

[11] एक प्रतियोगिता-आधारित पद्धति का उपयोग वित्त पोषण के लिए शहरों का चयन करने के साधन के रूप में किया जाता है जो क्षेत्र-आधारित विकास पर आधारित है। एक राउंड में उच्चतम अंक प्राप्त करने वाले शहरों को तब मिशन का हिस्सा बनने के लिए चुना गया। 2016 से 2018 की अवधि के दौरान पहले दौर में 20 स्मार्ट शहरों का चयन किया गया, दूसरे दौर में 27 स्मार्ट शहरों का चयन किया गया, तीसरे दौर में 30 स्मार्ट शहरों का चयन किया गया और चौथे दौर में 9 स्मार्ट शहरों का चयन किया गया।

[12] ये तीन मानदंड - संसाधन जुटाना, व्यय निष्पादन और राजकोषीय अभिशासन हैं। रैंकिंग चार जनसंख्या श्रेणियों पर आधारित होगी- 4 मिलियन से ऊपर, 1-4 मिलियन के बीच, 100K से 1 मिलियन और 100,000 से कम। अंतिम रैंकिंग की घोषणा जुलाई 2023 में होने की उम्मीद है।

[13] एसडीजी इंडिया इंडेक्स एसडीजी प्रगति का दुनिया का पहला सरकार के नेतृत्व वाला उप-राष्ट्रीय माप है। एसडीजी इंडिया इंडेक्स प्रत्येक राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए 16 एसडीजी पर लक्ष्य-वार स्कोर की गणना करता है। कुल मिलाकर राज्य और केंद्र शासित प्रदेश के स्कोर 16 एसडीजी में इसके प्रदर्शन के आधार पर उप-राष्ट्रीय इकाई के कुल प्रदर्शन को मापने के लिए लक्ष्य-वार स्कोर से उत्पन्न होते हैं। यह सूचकांक दिसंबर 2018 में शुरू किया गया था। वर्ष 2020-21 के लिए, केरल सूचकांक पर पहले स्थान पर था जबकि तमिलनाडु और हिमाचल प्रदेश संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर रहे।

हम व्यापक उपभोक्ता विकल्पों और बेहतर जीवन स्तर के राष्ट्रीय लोकाचार में आगे बढ़ रहे हैं।

डीकार्बोनाइजेशन

जलवायु परिवर्तन विश्व स्तर पर चिंताजनक पैमाने और गति से हो रहा है। चरम स्तर की मौसमी घटनाएं अधिक और तीव्र होती जा रही हैं, जिससे विश्व स्तर पर और भारत में मानव जीवन और पर्यावरण का नुकसान बढ़ रहा है। अब तीव्र चिंता यह है कि जलवायु परिवर्तन मानव गतिविधि से बहुत प्रभावित है। वास्तव में 20 वीं शताब्दी के मध्य की अवधि को "एंथ्रोपोसीन" युग के रूप में परिभाषित किया गया है, जो जीवाश्म ईंधन के बढ़ते उपयोग के कारण पृथ्वी की जलवायु पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है।

भारत और अन्य विकासशील अर्थव्यवस्थाएं जलवायु विज्ञान और प्रौद्योगिकी में अपनी सीमित क्षमताओं और अनुकूलन और शमन के लिए अपर्याप्त निधि के कारण जलवायु परिवर्तन के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हैं। उनके लिए हरित पथ पर संक्रमण की सापेक्ष लागत उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में अधिक है; संक्रमण पहल उन्हें विकास की सीढ़ी से कई पायदान नीचे ला सकता है। विकासशील देशों में से भारत वैश्विक जलवायु संबंधी मुद्दे पर एक अग्रणी आवाज के रूप में उभरा है जो जलवायु समानता और न्याय विचारों को ध्यान में रखता है।

भारत ने इस दिशा में कई नीतिगत पहल की हैं। 2015 में भारत ने 2030 तक के लक्ष्यों के साथ जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसीसी) को अपनी राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित प्रतिबद्धताओं (एनडीसी) को प्रस्तुत किया। सीओपी26 में 2021[14] में भारत ने अपनी एनडीसी प्रतिबद्धताओं को अद्यतन किया, जो अब 2021 से 2030 की अवधि के लिए स्वच्छ ऊर्जा में संक्रमण ढांचे का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसने *पंचामृत* की पांच-गुना रणनीति के लिए प्रतिबद्ध किया है, जिसमें 2030 तक अपनी गैर-जीवाश्म-ईंधन-आधारित ऊर्जा क्षमता को 500 गीगावॉट तक बढ़ाना; अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का 50 प्रतिशत नवीकरणीय स्रोतों से जुटाना; और 2030 तक अपने सकल घरेलू उत्पाद की कार्बन तीव्रता को 45 प्रतिशत तक कम करना शामिल है। भारत का लक्ष्य 2070 तक शुद्ध शून्य लक्ष्य हासिल करना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, भारत ने सीओपी27 शिखर सम्मेलन में दीर्घकालिक कम उत्सर्जन विकास रणनीतियों (एलटी-एलईडीएस) को जारी किया है।

भारत ने 2016 में फ्रांस के साथ अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) की सह-स्थापना की है और हरित ऊर्जा पर निर्भरता बढ़ाने के लिए एक राष्ट्रीय हाइड्रोजन मिशन की घोषणा की है। 2022 में शुरू किया गया मिशन एलआईएफई (लाइफ) यानी लाइफस्टाइल फॉर द एनवायरनमेंट, अब पृथ्वी की सुरक्षा के लिए लोगों की शक्तियों को जोड़ने के लिए एक वैश्विक प्रयास है।

आरबीआई भी जलवायु जोखिमों के प्रबंधन में लगा हुआ है। अप्रैल 2021 में बैंक जलवायु जोखिम प्रबंधन और हरित वित्त में सर्वोत्तम प्रथाओं से लाभ उठाने और योगदान करने के लिए नेटवर्क फॉर ग्रीनिंग द फाइनेंशियल सिस्टम (एनजीएफएस) में शामिल हुआ। बैंकों के लिए प्राथमिकता क्षेत्र ऋण के हिस्से के रूप में नवीकरणीय विषयों को शामिल करने के अलावा, आरबीआई ने हाल ही में सोवरिन ग्रीन बॉन्ड जारी किए हैं, और ग्रीन डिपॉजिट जुटाने के लिए रूपरेखा जारी की है। इस विषय पर अनुसंधान के अग्रिम मोर्चे पर, रिज़र्व बैंक ने 3 मई 2023 को मुद्रा और वित्त, 2022-23 पर रिपोर्ट जारी की है, जिसका विषय "एक स्वच्छ हरित भारत की ओर" है। रिपोर्ट में जलवायु परिवर्तन के वृहद-वित्तीय प्रभावों और भारत के लिए संभावित राजकोषीय, मौद्रिक, विनियामकीय और अन्य नीतिगत विकल्पों पर चर्चा की गई है।

विक्टर ह्यूगो के शब्दों में, जिन्हें अब तक के सबसे महान फ्रांसीसी लेखकों में से एक माना जाता है, "दुनिया में और कुछ भी

[14] कॉन्फरेन्स ऑफ दी पार्टीज़ (सीओपी) जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन का सर्वोच्च निर्णय लेने वाला निकाय है। कन्वेंशन के पक्षकार सभी स्टेट्स का सीओपी में प्रतिनिधित्व किया जाता है, जिस पर वे कन्वेंशन के कार्यान्वयन और किसी भी अन्य कानूनी लिखतों की समीक्षा करते हैं जिन्हें सीओपी अपनाता है, और संस्थागत और प्रशासनिक व्यवस्था सहित कन्वेंशन के प्रभावी कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक निर्णय लेते हैं। सीओपी के लिए एक महत्वपूर्ण कार्य पार्टियों द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रीय संचार और उत्सर्जन सूची की समीक्षा करना है। सीओपी हर साल बैठक करता है जब तक कि पार्टियां अन्यथा निर्णय नहीं लेती हैं। पहली सीओपी बैठक मार्च 1995 में बर्लिन, जर्मनी में आयोजित की गई थी।

नहीं ... सभी सेनाएं नहीं... सिर्फ एक शक्तिशाली विचार है जिसका समय आ गया है ("Nothing else in the world…not all the armies… is so powerful as an idea whose time has come.")। भारत का समय आ गया है और हमें इसका फायदा उठाना चाहिए। आगे विकट परीक्षा की घड़ी और चुनौतियां हैं, लेकिन अगर हम तुलनात्मक लाभों का फायदा उठाते हैं तो उन्हें दूर किया जा सकता है। मैंने भविष्य में भारत की सकारात्मक स्थिति के पक्ष में कुछ परिभाषित आयामों के बारे में बात की है। हमें उन्हें अत्याधुनिक बनाने की जरूरत है जो इस सपने को संभव बना सके।

संक्षेप में

जब आप तेजी से बदलती दुनिया में कदम रखने के लिए तैयार होते हैं, तो हमेशा उस अटूट बंधन को संजोएं जो आपके मातृ संस्थान के साथ है। इस संदर्भ में, आपकी श्रद्धा सबसे पहले आपके शिक्षकों, आईजीआईडीआर के संकाय, के प्रति होनी चाहिए, जिन्होंने आपको प्रतिबद्धता, समर्पण और ईमानदारी के साथ पोषित किया। हमारे शिक्षक केवल ज्ञान नहीं देते हैं; वे हमारे अंदर आजीवन शिक्षार्थी बनने की इच्छा जागृत करते हैं। स्वामी विवेकानंद ने कहा था, "गुरु आत्म-साक्षात्कार का माध्यम है"। मैं भारत के भविष्य के जीवन को आकार देने और उस संस्थान की आत्मा बनने के लिए वर्तमान और भूतपूर्व सभी संकाय की सराहना करता हूं जिन्होंने छात्रों को हमारे राष्ट्र और दुनिया के योग्य नागरिक बनने के लिए तैयार किया है।

जब आप अपनी यात्रा शुरू कर रहे हैं, हमेशा विश्वास करें कि आप सर्वोत्कृष्टता प्राप्त करने में सक्षम हैं। आईजीआईडीआर में आपके शैक्षिक कार्यक्रम का सफल समापन आप में उस शक्ति और जुनून का पहला प्रमाण है। बड़े सपने देखने से डरो मत। इस ज्ञान के साथ दुनिया में बाहर निकलें कि कुछ भी संभव है यदि आप पूरी मेहनत करने के लिए तैयार हैं। अपनी यात्रा में, आप विफलता का सामना करेंगे, लेकिन विफलता सफलता के विपरीत नहीं है; यह सीखने और बढ़ने का अवसर है, और अपने सपनों को नहीं छोड़ता है। सफलता ऐसी चीज नहीं है जो रातोंरात मिल जाए। यह लगातार प्रयास, कड़ी मेहनत और समर्पण का परिणाम है। इसलिए, आप जो कुछ भी करते हैं उसमें उत्कृष्टता की तलाश करने की आदत डालें। प्रसिद्ध दार्शनिक और इतिहासकार विल डुरंट के शब्दों में, "उत्कृष्टता एक कार्य नहीं बल्कि एक आदत है। जो काम आप सबसे ज्यादा करते हैं वही काम आप सबसे अच्छा करेंगे ("Excellence is not an act but a habit. The things you do the most are the things you will do best.")। भविष्य आपके हाथों में है। आपके पास अपने भाग्य को आकार देने और दुनिया पर सकारात्मक प्रभाव डालते हुए सार्थक और पूर्ण जीवन बनाने की शक्ति है। इसलिए, अपना सिर ऊंचा करके वहां जाएं और सर्वोच्चता की ओर अथक प्रयास करें।

आप जहां भी रहेंगे और जो कुछ भी करेंगे, मैं आपकी सफलता की कामना करता हूं।

धन्यवाद।